# *Indian Institute of Technology (Banaras Hindu University)*

The Indian Institute of Technology (Banaras Hindu University) owes its existence to Mahamana Pandit Madan Mohan Malaviya, Bharat Ratna - the illustrious founder of the first residential university of modern India, the Banaras Hindu University. Pandit Madan Mohan Malviya could foresee the important role of technical education in fueling independent India to take on the global challenges.

Emanating from the panoptic vision and indefatigable endeavours of the Mahamana Pandit Madan Mohan Malaviya, the institute has been an embodiment of knowledge, skills and values since its inception as the Benaras Engineering College (BENCO) in 1919 and subsequent accompaniment by the College of Mining and Metallurgy (MINMET) in 1923, the College of Technology (TECHNO) in 1932 and the Pharmaceutical Engineering and Technology in 1932.

These three erstwhile colleges were merged to form the Institute of Technology (IT-BHU) in 1968 to provide an integrated educational base in engineering. The IT-BHU has been admitting students through the JEE conducted by the IITs since 1972 and has been consistently ranked amongst the top few engineering institutions of the country. IT-BHU became IIT (BHU) with effect from June 29, 2012 by an Act of Parliament.

At present, the Institute comprises 14 Departments and 3 interdisciplinary Schools. Central facilities of the Institute include Institute Library, Main Workshop, Central Instrumentation Facility, Centre for Computing and Information Services (CCIS), Centre for Energy Resource and Development (CERD) and Industrial Consultancy & Testing Services.

The Institute has maintained enviably high academic standards since its inception. Being true to its transformative texture, the institute has paved the pathways of learning for an inclusive world over the past hundred years. It has turned out luminary engineers, academics and administrators who served the nation with great distinction. The faculty and researchers of the Institute have been passionately involved in almost all frontiers of research and have been contributing their best to the advancement and dissemination of knowledge.

**The Centenary Celebrations:**

The Institute is walking into the annals of history by completing hundred years of its glorious existence in the year 2019. The centenary serves as an occasion to assess its strengths in the light of current national challenges and its future role as a premier technology institute of the country. The centenary celebrations of the institute are taking place with a framework of new undertakings for the future. With this idea, a few projects have been launched during this centenary celebration period. These projects are Shatabdi Kosh, Shatabdi Goshthi Sankul, Shatabdi Granthagaar, Shatabdi Sanskritik Sankul, Shatabdi Information Technology Services Centre. Five Centenary Chairs have been instituted to provide state-of-the-art teaching and research environment in the Institute. Another institute initiative taken up is the establishment of seven research centers that have been recognized by the Institute as plausible areas of research and education.

During this centenary celebration period, the Institute has also taken up a major initiative to create a Research Park in the Institute Campus. The Departments/Schools and Central Units of the Institute are also taking up several centenary initiatives at their ends. They would be organizing Departmental centenary lectures, brainstorming sessions, seminars, symposia, workshop and conferences in their respective areas. An exhibition of the centenary initiatives of the Institute, Departments/Schools and Central Units is planned during the main function.

Department of Posts is pleased to issue a Commemorative Postage Stamp on Indian Institute of Technology (Banaras Hindu University) on its centenary.

**Credits:**

| | | |
|---|---|---|
| **Text** | : | Based on information received from the proponent |
| **Stamp/ FDC/ Brochure** | : | Sh. Suresh Kumar |
| **Cancellation Cachet** | : | Smt. Alka Sharma |

# भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय)

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय) की स्थापना का श्रेय भारत रत्न महामना पंडित मदन मोहन मालवीय को जाता है। इन्होंने आधुनिक भारत के प्रथम आवासीय विश्वविद्यालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। पंडित मदन मोहन मालवीय ने, वैश्विक चुनौतियों का सामना करने की दृष्टि से स्वतंत्र भारत के लिए तकनीकी शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका को समझ लिया था।

महामना पंडित मदन मोहन मालवीय की व्यापक दृष्टि और उनके अथक प्रयासों से यह संस्थान अपनी स्थापना के समय से ही अर्थात् 1919 से ही काशी इंजीनियरिंग कॉलेज (बीईएनसीओ) के रूप में ज्ञान, कौशल और मूल्यों का केन्द्र बना हुआ है। बाद में इसके साथ 1923 में कॉलेज ऑफ माइनिंग एंड मेटालर्जी (एमआईएनएमईटी), 1932 में कॉलेज ऑफ टेक्नालॉजी और 1932 में ही फार्मास्युटिकल इंजीनियरिंग एंड टेक्नालॉजी भी जुड़ गए।

इंजीनियरी में एकीकृत शैक्षणिक आधार प्रदान करने के उद्देश्य से वर्ष 1968 में प्रौद्योगिकी संस्थान (आईटी–बी.एच.यू.) बनाने के लिए इन तीनों पूर्ववर्ती कॉलेजों का विलय कर दिया गया। आईटी–बी.एच.यू. 1972 से भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों द्वारा संचालित संयुक्त प्रवेश परीक्षा (जेईई) के माध्यम से विद्यार्थियों को प्रवेश देता रहा है और लगातार देश के चुनिंदा उच्च इंजीनियरी संस्थानों में स्थान पाता रहा है। आईटी–बी.एच.यू. 29 जून, 2012 से प्रभावी, संसद के अधिनियम के तहत आईआईटी (बी.एच.यू.) बना।

इस समय, संस्थान में 14 विभाग और 3 अंतर–विषयक विद्यालय हैं। संस्थान की मुख्य सुविधाओं में संस्थान का पुस्तकालय, मुख्य कार्यशाला, केन्द्रीय इंस्ट्रूमेन्टेशन सुविधा, परिकलन एवं सूचना सेवा केन्द्र (सीसीआईएस), ऊर्जा स्रोत एवं विकास केन्द्र (सीईआरडी) और औद्योगिक परामर्शदात्री एवं परीक्षण सेवाएं शामिल हैं।

संस्थान ने अपनी स्थापना के समय से ही उच्च शैक्षणिक मानदंड बनाए रखे हैं। अपनी रूपान्तरकारी संरचना के अनुरूप, संस्थान ने पिछले सौ वर्षों में समग्र विश्व के लिए ज्ञान प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त किया है। इसने प्रतिभाशाली इंजीनियर, शिक्षाविद और प्रशासक दिए हैं जिन्होंने अपनी विशेष योग्यता के साथ देश को अपनी सेवाएं दीं। संस्थान का प्राध्यापक वर्ग और शोधकर्ता शोध के प्रायः सभी क्षेत्रों में बड़े उत्साह से शामिल रहे हैं और ज्ञान के उन्नयन और प्रचार–प्रसार के लिए अपना भरसक योगदान देते रहे हैं।

**शताब्दी समारोह**

संस्थान वर्ष 2019 में, अपनी गौरवपूर्ण मौजूदगी के सौ वर्ष पूरे करते हुए इतिहास में प्रवेश कर रहा है। शताब्दी वर्ष वर्तमान राष्ट्रीय चुनौतियों के सदंर्भ में इसकी सामर्थ्य और देश के मुख्य प्रौद्योगिकी संस्थान के रूप में इसकी भावी भूमिका का मूल्यांकन करने का अवसर प्रदान करता है। नई वचनबद्धताओं की भावी रूपरेखा के साथ संस्थान के शताब्दी समारोह का आयोजन किया जा रहा है। इसी विचार से, इस शताब्दी समारोह अवधि के दौरान कुछ परियोजनाएं शुरू की गई हैं। इन परियोजनाओं में शताब्दी कोश, शताब्दी गोष्ठी संकुल, शताब्दी ग्रंथागार, शताब्दी सांस्कृतिक संकुल, शताब्दी सूचना प्रौद्योगिकी सेवाएं केन्द्र शामिल हैं। संस्थान को अत्याधुनिक शिक्षण और शोध संबंधी वातावरण प्रदान करने के लिए पांच शताब्दी पीठ बनाए गए हैं। सात शोध केन्द्रों की स्थापना के रूप में संस्थान द्वारा एक अन्य पहल की गई है, जिनकी संस्थान ने शोध और शिक्षा के उपयुक्त क्षेत्रों के रूप में पहचान की थी।

इस शताब्दी समारोह अवधि के दौरान, संस्थान ने अपने परिसर में अनुसंधान पार्क बनाने की एक बड़ी पहल की है। संस्थान के विभाग/विद्यालय और मुख्य यूनिटें भी इस अवसर पर अपनी ओर से कई पहलें कर रही हैं। वे अपने संबंधित क्षेत्रों में विभागीय शताब्दी व्याख्यान, विचार मंथन सत्र, सेमिनार, संगोष्ठियों, कार्यशालाओं और सम्मेलनों का आयोजन करेंगी। मुख्य समारोह के दौरान संस्थान ने विभागों/विद्यालयों और मुख्य यूनिटों की शताब्दी पहलों की एक प्रदर्शनी का आयोजन करने की योजना बनाई है।

डाक विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय) अपने शताब्दी वर्ष के अवसर पर एक स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

**आभार :**

**पाठ** : प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना पर आधारित

**डाक–टिकट / प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका** : श्री सुरेश कुमार

**विरूपण मोहर** : श्रीमती अलका शर्मा

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

## तकनीकी आंकड़े
## TECHNICAL DATA

| | |
|---|---|
| मूल्यवर्ग | : 500 पैसा |
| Denomination | : 500 p |
| मुद्रित डाक–टिकटें | : 502380 |
| Stamps Printed | : 502380 |
| मुद्रण प्रक्रिया | : वेट ऑफसेट |
| Printing Process | : Wet Offset |
| मुद्रक | : भारतीय प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद |
| Printer | : Security Printing Press, Hyderabad |

The philatelic items are available for sale at
http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html



मूल्यः ₹ 5.00